शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शिवानी (गौरा पंत) के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

डॉ.राजेन्द्र सिंह बिष्ट (शोधार्थी)
हिंदी विभाग राजकीय स्ना महाविद्यालय
बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

सुप्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यास लेखिका शिवानी की अधिकांश कथाओं में सामाजिक चेतना चित्रित हुई है। शिवानी की प्रथम कहानी कृष्णकली बंगला भाषा में लिखी हुई थी। इनकी प्रथम हिंदी कहानी 'जमीदार' की मृत्यु प्रकाशित हुई। इनकी अधिकांश कहानियाँ, लघु उपन्यास, संस्मरण, रचनाओं और अन्य विषयक लेखों के साथ संगृहीत है। 'रति विलाप', 'चिर 'स्वयंवरा', 'करिए छिमा', 'उप्रेती', स्वयंसिद्धा, कृष्णवेली, मणिमाला की हंसी, पूतोंवाली, गैंडा, माणिक, चौदह फेरे आदि रचनाएँ प्रकाशित हैं। शिवानी की कहानियों में पर्याप्त विविधता है। इनके कहानी साहित्य में कुमाऊँ आंचलिक समाज से लेकर छोटे-बड़े नगर और महानगर तक का विस्तार है।

संकेत शब्द : संवेदना आत्मीयता स्वार्थपरता स्वच्छंद प्रवृत्ति रुढ़िवादिता।

शिवानी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

हिंदी कहानी साहित्य में शिवानी का नाम बड़े ही आदर से लिया जता है। उनके कहानी साहित्य का महत्व नारी संवेदना को अत्यंत आत्मीयता एवं कलात्मक दृष्टि से चित्रित करने में हैं। शिवानी की 'जिलाधीश' कहानी की प्रधान नायिका सुमन समाज की स्वार्थपरता के कारण ही रिश्ते की विफलता का दंश झेलती है। किन्तु जब वह अपनी प्रतिभा के बल पर जिलाधीश के पद को प्राप्त करती है तो उसके पास विवाह के लिए समृद्ध घरों के प्रस्ताव आने लगते हैं। वस्तुतः विवाह एक लड़की से नहीं उसकी समृद्ध व उच्च पद की लालसा से किया जा रहा है। यही रिश्ते वाली बात उसकी दुखती रग थी। कौन-सा घर-वर ऐसा बचा था जहां उसके रिश्ते की बात नहीं चली, किन्तु किसी लड़के को उसका निम्नवर्गीय परिवार नहीं रुचता। कोई उसकी असाधारण प्रतिभा से सहम जाता। आज उसके लिए एक से एक समृद्ध घरों से प्रस्ताव आने लगे थे। पर अब वह पांच वर्ष पूर्व की सुमन न थी। वह तो जैसे माँ के गर्भ से ही राजदंड लेकर जन्मी थी। सचमुच ही असाधारण थी वह लड़की।"1 कहानी से समाज को यह दिशा प्राप्त होती है कि एक असाधारण लड़की कहाँ से कहाँ पहुँच सकती है। स्वार्थपरक समाज आज भी दहेज लोभी एवं सेवारत लड़की की खोज में भटक रहा है।

शिवानी की 'दो बहने' कहानी की बुआ में भी स्वार्थपरता कम नहीं है। वह सब प्रकार से संपन्न होते हुए भी अपने भाई-भाभी की कृपा की आभारी बने रहना चाहती है। इस कहानी के पात्र केशव को दहेज लोभी के रूप में चित्रित किया गया है। कहानी की जया से सगाई के बावजूद भी वह अर्थ लोभ के कारण एक लखपति प्रवासी पहाड़ी कन्या से विवाह कर लेता है। लड़की साँवली थी। लाखों की सम्पत्ति और इकलौती कन्या दुर्गादत्त का पुत्र केशव भला मौका कैसे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चूकता। इस कहानी के पात्र केशव का चित्रण देखकर ऐसा लगता है जैसे दहेज लोभी समाज में भरे पड़े हैं। उसने कभी यह नहीं सोचा जिस जया से उसकी सगाई हो चुकी उसका क्या होगा। समाज में कितनी बातें उसे कचोटती रहेंगी।

शिवानी कृत 'निर्वाण' कहानी में कथाकार शिवानी इस कहानी की नायिका मनोरमा की प्रदर्शन-प्रियता का उद्घाटन करते हुए लिखती है, "विधाता प्रदत्त नैन नक्श को भी उसने जैसे बड़े दुस्साहस से किसी अदृश्य स्पर्श से मिटा दिया था। पेंसिल से अंकित दो धनुषकार भँवे, लिपस्टिक के कलात्मक कपोलों पर 'ब्लश-अनि' की लालिमा और निर्लज्ज धड़ल्लेपन से खुली सोफिया लैरिन की सी मकेलाइन।"2 इस कहानी में कहानीकार शिवानी ने इस कहानी की नायिका के माध्यम से समाज में उच्च वर्ग की प्रदर्शन-प्रियता को व्यक्त किया है।

शिवानी कृत 'गूँगी' कहानी की युवती कृष्णा अपने पिता से पूछे बिना अपने बालमित्र से विवाह तो करती है। वह उसके बच्चे की माँ भी बनती है। अपनी स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण अपने पिता के सम्मुख माँ बनने की सूचना देने में उसे कोई संकोच नहीं होता है। इस कहानी के माध्यम से नवयुवक द्वारा अपने संस्कार को भूल जाना और उससे समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को चित्रित किया गया है। शिवानी की 'अपराजिता' कहानी की सर्वगुण संपन्न एवं पुलिस विभाग में उच्च पद पर आसीन आरती भी अपने परिवार की विषम परिस्थितियों से तनाव ग्रस्त चित्रित की गयी है। उसके अंतर्मन के तनाव एवं कुंठा को व्यक्त करने वाला एक अंश उद्धृत किया जा रहा है, "इस बार शोकाकुल आरती की आँखों से अविरल अश्रुधार बहने लगी। पहली बार उसे लगा कि उसके बाह्य आवरण के बीच उसकी ऊँची नौकरी उसकी प्रतिभा उसकी ख्याति के बीच केवल पत्नी भाव की ही धारा निरंतर बहती रही थी। वही आज उसके विवेक, संयम, लज्जा, बाह्याडम्बर के रोड़ा-पत्थरों को ठेलती फूटकर बाहर निकल पड़ी थी।"3 कहानी में नायिका के उच्च पद पर आसीन होने पर भी समाज द्वारा दिए जाने वाले दुःख को चित्रित किया गया है। समाज में परिवार, रिश्ते-नाते, पड़ोसी, सबके दुःख व सुख का भागीदार बनना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

शिवानी द्वारा रचित 'श्राप' कहानी की नवयुवती दिव्या और उसके माँ-बाप आर्थिक कठिनाइयों का दंश झेलते अपनी पुत्री का विवाह एक बदरूप गुणहीन एवं प्रौढ़ व्यक्ति से करते हैं। समाज में कैसी विषमता आ रही है। सर्वगुण संपन्न पुत्री के विवाह के लिए लड़के का न मिलना समाज को सोचने पर मजबूर करता है। इसके अतिरिक्त अपने सामर्थ्य से अधिक विवाह में खर्च करने के बावजूद भी दिव्या को दहेज के खातिर आत्महत्या करनी पड़ती है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज भारतीय समाज में कई ऐसे परिवार आसानी से मिलेंगे जिनकी दिव्या जैसी कन्याएँ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में दहेज की बलि चढ़ती है। शिवानी की 'मास्टरनी' कहानी कथा नायिका राजेश्वरी अपने जीवन से संघर्ष करती दिखाई देती है। प्रेमी के द्वारा छले जाने के बावजूद भी वह अपरिमित संघर्ष का परिचय देती है। इसी प्रकार शिवानी की 'विप्रलब्धा' कहानी की 'निम्मी', 'उपहार' कहानी की नलिनी, 'चिर स्वयंवरा' कहानी की रजनी दी, 'गहरी नींद' कहानी की मीरा, 'सौत' कहानी की नीरा, समाज द्वारा शोषण करने पर संघर्ष करने के बावजूद भी कुछ नारी पात्र मानसिक संतुलन खो बैठती हैं। कुछ नारी पात्र रूदन करते चित्रित किये गए

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हैं तो कुछ आत्महत्या के लिए उद्धत दिखाई पड़ती हैं।

इसी प्रकार शिवानी की 'पूतोंवाली' बदला उपन्यास में रुढ़िवादिता का विरोध हुआ है। साथ में सांप्रदायिकता सद्भाव भी नष्ट होता दिखाई देता है। इस उपन्यास की युवा नायिका की माँ रामेश्वरी पुत्री का पक्ष लेने की चेष्टा की है। "कैसी बातें कर रहे हैं। अब क्या आपका-हमारा जमाना रह गया है कि जहां मां-बाप ने बांधा वहीं बंध गए। वह तो गनीमत समझिए कि लड़की ने कम-से-कम हिंदू लड़का तो छांटा। अपने उन आई.जी. को ही लीजिए- लड़का मुसलमान बहू ले आया तो क्या कर लिया उन्होंने।"4 शिवानी की 'लाटी' कहानी की बानू अपनी ननदों, भतीजो, ससुर और सास के तानों व उत्पीड़न की अपार यंत्रणा झेलती है। अपने परिवार से मिलने वाली यंत्रणा से समाज में उसकी क्या इज्जत रह जाती है। समाज में भी स्त्री-पुरुष में भेदभाव किया जाता है।

शिवानी कृत 'तीन कन्या' कहानी में बेनी की माँ को समाज क्या कहेगा की चिन्ता है। हिन्दू गृहस्थ के यहाँ जो रीति चली आ रही है वही तो होगा। बेबी की माँ को समाज व रीति की चिन्ता है। बेबी अपने परिवार की सबसे छोटी लड़की है। उसका प्रफुल्ल से प्रेम संबंध है, किन्तु सगाई के बावजूद भी वह विवाह करने में असफल है, क्योंकि बेबी की माँ चाहती है पहले बड़ी लड़की का विवाह हो जाये। बेबी की माँ कहती है, "आहा मेरो आबार की बोले! सबसे छोटी की कर दूँ तो दुनिया यही कहेगी कि खरा माल तो बिक गया खोटा रह गया। हिन्दू गृहस्थ के यहाँ जो रीति चली आई है वही तो होगा।"5 शिवानी के 'कृष्णवेणी' उपन्यास में मध्यम वर्ग की आर्थिक कठिनाइयों का चित्रण हुआ हैं। कथा का पात्र नवयुवक मछुवारों की आर्थिक स्थिति को उजागर करते हुए कहता है, "मुझे भी कभी-कभी वहां बैठकर वही अनुभव हुआ है। इस जलशून्य रेतीले टुकड़े की कुछ दूरी पर मछुओं की रिक्त विशाल नौकाएं बंधी रहती हैं। यहीं से उनका आधी रात का दुःसाहसी अभियान आरंभ होता है जब वे अपने अर्धनग्न काले शरीरों को दर्पण-सा चमकाते तूफानी लहरों से निर्भय निःशंक होकर जूझने निकल पड़ते हैं- मछली पकड़ने। कब समुद्री तूफान आ जाए और उन्हें लपेट ले।"6 उपन्यास में मछुवारों की आर्थिक स्थिति को उजागर करते हुए जिन्दगी से लड़ने का चित्रण हुआ है।

'पिटी हुई गोट' की नारी चन्दो के पति को जुए की लत है। वह आत्महत्या कर लेता है। चन्दो पर कैसे विपत्ती का पहाड़ टूट पड़ता है। उसका भांजा मामी से आकर कहता है, "मामी, मामाजी ताल में कूद गये। मंदिर के पुजारी ने देखा कांटा डाला है, पर लाश नहीं मिली, नाश हो इन जुआरियों का! बेचारे को लूट-पाट कर धर दिया। "स्तब्ध चन्दो द्वार की चौखट पकड़े ही धम्म से बैठ गई। किसने उसका सिन्दूर पोछा, किसने चूड़ियाँ तोड़ी और कौन नोच कर मंगल-सूत्र तोड़ गई, वह कुछ भी नहीं जान पाई वह पागलों सी बैठी थी।"7 कहानी ने समाज को आईना दिखाया है कि जुआ एक घर को किस प्रकार बर्बाद कर देता हैं।

'कृष्णवेणी' उपन्यास में कुमाऊँ के निम्न वर्गीय परिवारों में व्याप्त आर्थिक कठिनाइयों से संत्रस्त चरित्र दिखाई देते हैं। इस उपन्यास के पात्र गुरुदास के माध्यम से आर्थिक कठिनाइयों का निरूपण हुआ है। उदाहरण दृष्टव्य है, "तू आज भीतर से कुंडी चढ़ाकर खा-पीकर सो जाना। मुझे भीमताल जाना है। उसने पत्नी से कहा और

गबरून के फटे कोट पर पंखी लपेटकर निकलने ही को था।"8

निष्कर्ष

शिवानी ने अपने कथा साहित्य में पहाड़ व नगरीय जनजीवन का जीवंत चित्रण किया है। इनकी रचनाओं में मुख्य पात्र नारी है। कुमाउनी होने के कारण शिवानी कुमाऊँ की सामाजिक और सांस्कृतिक बनावट से भली-भांति परिचित हैं। शिवानी जी हजारीप्रसाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर से बहुत प्रभावित थीं। शिवानी जी की हर रचना में नारी मुख्य है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से से हर जाति की महिला का चित्रण किया है। इनकी दो स्मृति चिन्ह मौसी ज्यूडिथ से जयंती कहानी में और पूतोंवाली उपन्यास में विजातीय विवाह व गंधर्व विवाह का चित्रण किया है। इनकी 'जिलाधीश' कहानी में एक राजनेता द्वारा नारी का शोषण व नारी पर अत्याचार के साफ-साफ चित्र दिखाई देते हैं। एक ओर इनकी नारी पात्र अपनी मानसिक कुंठा विवशता का कारण लेकर व्यापक संवेदना से युक्त है और दूसरी तरफ नारी पात्र स्वाभिमानी आत्मविश्वास रूप में चित्रित हुई है। इनकी 'पूतोंवाली' 'लाल हवेली' 'बदला' आदि कहानी में नारी पात्र अपने आत्मसम्मान को नहीं हारना चाहती हैं। पुरुष जाति से हर हाल में आगे बढ़ना चाहती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 जिलाधीश (करिए छिमा), शिवानी, हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली, 1995 पृष्ठ 26

2 निर्वाण (स्वयं सिद्धा), हिंदी पाकेट बुक्स, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 54 व 55

3 अपराजिता (स्वयं सिद्धा), हिंदी पाकेट बुक्स, दिल्ली, 2002 पृष्ठ 51

4 बदला (पूतोंवाली), हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली, 1986, पृष्ठ 57

5 तीन कन्या (स्वयंसिद्धा) हिंदी पाकेट बुक्स, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 77

6 कृष्णवेणी, सरस्वती विहार, दिल्ली, 1981 पृष्ठ 90

7 पिटी हुई गोट (करिए छिमा), हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली, 1995, पृष्ठ 110

8 कृष्णवेणी, सरस्वती विहार, दिल्ली, 1981, पृष्ठ 80